वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक :
डॉ. अशोक कुमार मूँधड़ा

संपादक :
डॉ. अशोक कुमार द्विवेदी

सह-संपादक मंडल :
डॉ. सुनील पाटिल
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी
डॉ. कुमार अभिषेक
डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र

हिन्दी विभाग शिफ्ट 2,
द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव कॉलेज
अरूम्बाक्कम, चेन्नई - 600106.

प्रकाशक :
बोध प्रकाशन
35, वालटैक्स रोड, चेन्नई - 600079.

ISBN : 978-93-82380-19-1

वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता
की प्रासंगिकता

Varthman Samaj ke liye Shrimad Bhagawad Geeta ki Prasangikata

Chief Editor : **Dr. Ashok Kumar Mundhra**

Editor : **Dr. Ashok Kumar Dwivedi**

Edition : November 2024

Price : ₹ **450**

Published by :
BOADH PRAKASHAN
35, Walltax Road, Chennai - 600079.

Printed by :
RACHANA
35, Walltax Road, Chennai - 600079.

Typesetting by :
Vivek Agarwal, Bengaluru.

13. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. रंजीता भारती 72

14. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
कलैमति ई 74

15. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
कीर्तना जी 76

16. आधुनिक काल में भगवद् गीता का महत्व
रेखा कुमारी 78

17. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
शेजल खत्री 82

18. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. वी. जयलक्ष्मी 85

19. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
नेहा बिश्नोई जे. 89

20. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. मिथलेश सिंह 92

21. सामाजिक समरसता में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. प्रेमचंद भार्गव 98

22. भगवद्गीता – वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता
ॅ. पूर्णिमा श्रीनिवासन 103

23. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
भावना गौड़ 107

24. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
साईमीरा जोशी 112

25. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. लावण्या एस 118

26. वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता
डॉ. कुमार अभिषेक 122

अर्थात् : काम, क्रोध, व लोभ नरक के द्वार हैं। यह आत्मा का नाश करने वाले हैं। मानव को अवनती की ओर ले जाने वाले हैं। इसीलिए इन गुणो को त्यागना चाहिए।

किसी प्रकार की इच्छाएं यानी काम, गुस्सा, लालच ही मानव समाज में व्याप्त समस्त बुराइयों का मूल कारण है। किसी भी विषय, चीज चाहे वह हमारे लिए हानिकारक भी क्यों ना हो उसे प्राप्त करने की होड़ में मानव किसी भी हद तक जाने के लिए तत्पर है। इसके चलते वह अवांछनीय कार्य करने के लिए विवश होता है। बाद में दुष्कर्म का फल भुगता है। यदि मनचाहा वस्तु या विषय उन्हें प्राप्त नहीं होता है, तो वहां क्रोध का जन्म होता है। क्रोध के बारे में श्री कृष्ण एक अन्य स्थान में यूं कहते हैं :

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद्बुद्धि नाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।(2:63)

अर्थात् काम या वासनाओं की प्राप्ति नहीं होने से क्रोध का जन्म होता है। क्रोध हमारी बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। मति मूढ़ हो जाता है। परिणाम स्वरूप स्मृति भ्रमित हो जाती है। स्मृति भ्रमित हो जाने से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धि का नाश हो जाने से मनुष्य स्वयं का नाश कर बैठता है।

यहां क्रोध के दुष्प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। क्रोध हमें क्षण भर के लिए पशुवत व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। क्रोध से ही, क्रोध की वजह से ही, हम जाने अनजाने में गलत कार्य कर बैठते हैं। बाद में आजीवन उस कार्य के लिए पछताते हैं। क्रोध को अपने वश करने से न केवल अपने तथा परिवार, अपने तथा सामाजिक संबंधों में वांछित परिवर्तन प्राप्त कर सकते हैं। अतः यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है।

तमिल के महान संत तिरुवल्लुवर, क्रोध के दुष्प्रभाव का सांगोपांग वर्णन 'वेगुलामै' नामक अध्याय में यूं करते हैं –

तवैतानकाविकिन सिनम कावक्कअ कावावक्काल
तन्नैये कोल्लुम सिनम। (305)

अर्थात् यदि स्वयं की रक्षा करनी है तो क्रोध पर नियंत्रण रखना है।

वर्तमान युग में काम, क्रोध और लोभ मानव जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। यह मानव के विनाश का बीज है। यह तीनों 'अपशब्द' व 'ईर्ष्या' नामक अवगुण का जन्म देते हैं। अर्थात ईर्ष्या, क्रोध, लोभ और अपशब्द से मानव जाति

का पथभ्रष्ट सुनिश्चित है। इसका उल्लेख हमें तिरुक्कुरल में भी प्राप्त होता है –

अषुक्कारु अवावेगुलि इन्नोल इवैनान्गुम
इषुक्का इयन्ड्रदरम्। (35)

अर्थात् ईर्ष्या, लालच, क्रोध, कटुवचन इन चार गुणो से मुक्त मार्ग ही सदाचार या धर्म का सार है। काम, क्रोध, लालच, कटुवचन से हमें कोई शाश्वत लाभ अथवा जीवन लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। जहां तक हो सके इसका प्रयोग नहीं करके धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास हमें अवश्य करना चाहिए। अपने जीवन लक्ष्य को पाने के लिए इन अवगुणों को हमें हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। जिस मनुष्य में यह अवगुण होता हैं वह हमेशा दुखी रहता है तथा दूसरों को भी हानि पहुंचाता है। किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए हमें निश्छल और शांत भाव अनिवार्य है। अर्थात काम, क्रोध, कटुवचन, लोभ, से विमुक्त होना आवश्यक है।

2. सतत अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो :

लक्ष्य प्राप्ति के लिए मानव को निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है। अर्थात् हमेशा उत्साह से जीवन के संघर्षों में आने वाली चुनौतियों का सामना साहस एवं दृढ़ता के साथ विजय को ध्यान में रखकर करना चाहिए। मानव जीवन में उन्नति तथा सफलता की प्राप्ति के लिए उत्साह श्रेयस्कर गुण माना जाता है। सफलता प्राप्त हो या ना हो हमें जीवन रुपी संघर्ष में उत्साह से भाग लेना चाहिए।

समस्त प्रकार की मानसिक दुर्बलताओं को त्याग दें। यह उपदेश मात्र अर्जुन के लिए ही नहीं अपितु समग्र मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। विशेष रूप से कोरोना जैसी क्रूर महामारियों की चपेट में आने के पश्चात उसके दुष्प्रभाव, दुख-दर्द, वेदना, हताशा, निराशा, आदि से मुक्ति पाने के लिए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए यह उपदेश अत्यंत प्रेरणादायी है। यहां स्वामी विवेकानंद के उपदेश 'अरैंज अवैक एण्ड स्टॉप नॉट टील थ गोल इस रिच्ड' ध्यान देने योग्य है। उत्साह के बारे में तिरुवल्लुवर यूं कहते हैं कि उत्साही मानव में ऐश्वर्य घर कर लेती है तिरुवल्लुवर के शब्दों में –

आक्कम अदरविनाय चेल्लुम असैविला
ऊक्कम उडैयान उषै।। (594)

अपने धर्म के अनुसार जो कार्य करना है, उसे सदैव हमें करना चाहिए, बिना

किसी कर्म फल की अपेक्षा से। यदि अपने कर्म करते समय उसके फल के बारे में सोचेंगे तो पूर्ण निष्ठा के साथ अपना कर्तव्य नहीं निभा पायेंगे। इसीलिए निष्काम कर्म ही सर्वश्रेष्ठ परिणाम देता है। फल मिलेगा? मिलेगा तो कितना मिलेगा? नहीं मिलेगा तो क्यों नहीं मिलेगा? आदि सारी बातें परमात्मा पर छोड़ दे, क्योंकि परमात्मा ही सभी का पालनकर्ता है। इसी विषय के बारे में श्री कृष्णा अर्जुन को यह उपदेश देते हैं –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोस्त्व कर्मणि।।(2-47)

अर्थात् कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, कर्म के फलों में कभी नहीं। अतः कर्मफल का हेतु भी मत बन और कर्म न करने के विषय में भी तू आग्रह न कर।

ऐसी भावना हमें सारी टेंशनों से मुक्ति दिलाती है। साथ ही हमें शांति प्रदान करती है। अर्थात टेंशन, एंजायटी, बीपी, शुगर, आदि चिंता जनित बीमारियों से मुक्ति दिलाती है। हमें आशावादी दृष्टिकोण प्रदान करती है। औरों से स्वयं की, तथा अपने बच्चे, परिवार आदि की तुलना, भविष्य की चिंता, आदि से छुटकारा मिलती है। सरल जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है।

निष्कर्ष : अत: हम यह कह सकते हैं कि जिस कृति मानव को अपने लक्ष्य के प्रति प्रेरित करती है, कठिन विकट परिस्थितियों से पार करने की क्षमता या शक्ति प्रदान करती है, वही कृति कालजयी कृति मानी जाती है। वह कृति, जो प्रत्येक युग को सचेतता है और सजगता है, कालनिरपेक्ष, धर्मनिरपेक्ष और देश निरपेक्ष है, वह कृति प्रासंगिक होती है। अर्थात् श्रीमद् भगवद् गीता सर्वकालिक और सार्वभौमिक मूल्यों की कोष है। इस दृष्टि से देखा जाए तो गीता के प्रत्येक श्लोक प्रासंगिकता की कसौटी में खरे उतरते हैं। अतः गीता निसंदेह आज भी प्रासंगिक है तथा सदा प्रासंगिक रहेगी।

* * *